ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि। सामवेद 1026
हे विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe ! You are the Greatest of all.

वर्ष 37, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 सितम्बर, 2014 से रविवार 21 सितम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विशेष सम्पादकीय

वेद भाषा-देव भाषा: संस्कृत का महत्त्व

आने वाली गुरु विरजानन्द जयन्ती पर लें संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने का संकल्प

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। क्योंकि संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद है। वेद ईश्वर की वाणी है, और उसकी भाषा संस्कृत है। इसलिए **वेद भाषा ही संसार की सभी भाषाओं का कारण है।** (स.प्र.समु.7) संस्कृत की लिपि देवनागरी है, जो अत्यन्त शुद्ध एवं पूर्ण है। यही कारण है कि- संस्कृत में विश्व की सभी भाषाओं का रूपान्तर हो जाता है परन्तु संस्कृत का रूपान्तरण सभी भाषाओं में नहीं हो सकता। यह बात संस्कृत शब्द के अर्थ से ही प्रकट हो जाती है।

सम् पूर्वक कृ धातु से संस्कृत शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है **शुद्ध एवं परिष्कृत, व्याकरण दोषों से रहित भाषा संस्कृत कहलाती है।**

अब प्रश्न उठता है कि वेद की भाषा संस्कृत ही क्यों है? कोई अन्य भाषा क्यों नहीं? इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में वेद की भाषा संस्कृत होने के पक्ष में विचार देते है। कि – "जो किसी देश-भाषा में प्रकाश करता तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता, क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाश करता उनको सुगमता और विदेशियों को कठिनता, वेदों के पढ़ने-पढ़ाने की होती, इसलिए संस्कृत ही में वेदों का प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं है और वेदभाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है।"

इसलिए प्राचीन काल से ही संस्कृत ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र रहा है। संस्कृत का पढ़ना-पढ़ाना इसलिए महत्वपूर्ण है कि- संस्कृत के 'ज्ञान और विज्ञान' का संरक्षण एवं संवर्द्धन होता रहे यह तभी हो सकता है जब हम संस्कृत का गहन अध्ययन करें। अब एक और प्रश्न उठता है कि- क्या संस्कृत ज्ञान को अन्य भाषाओं में रूपान्तरित कर उसके रहस्य को नहीं समझा जा सकता? इस के मुख्यत: दो कारण है **प्रथम यह कि**- संस्कृत के ज्ञान विज्ञान को समझने के लिए प्रथम संस्कृत ज्ञान तथा जिस भाषा में रुपान्तरण करना है उस भाषा का ज्ञान भी होना आवश्यक है। अर्थात् अन्य भाषा के ज्ञान के साथ संस्कृत का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है। **द्वितीय यह कि**- संस्कृत ज्ञान के भाव का रूपान्तरण तो किया जा सकता है लेकिन मूल रूप से उसका किसी भी भाषा में रूपान्तरण नहीं हो सकता अर्थात् शब्द विज्ञान की मौलिकता को परिवर्तित नहीं किया जा सकता। यह सार्वभौमिक सत्य है कि संस्कृत केवल इस लोक की ही भाषा नहीं अपितु

– शेष पृष्ट 2 पर

राष्ट्रीय ध्येय संस्कृत भाषा में

1.	भारत सरकार	: सत्यमेव जयते
2.	लोक सभा	: धर्मचक्रप्रवर्तनाय
3.	उच्चतम न्यायालय भारत	: यतो धर्मस्ततो जय:
4.	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय	: ब्रह्मचर्येण तपसा देवा
5.	ऑल इण्डिया रेडियो	: बहुजन हिताय
6.	दूरदर्शन	: सत्यं शिवं सुन्दरम्
7.	थलसेना (आर्मी)	: सेवा अस्माकं धर्म:
8.	वायुसेना	: नभ: स्पृशं दीप्तम्
9.	जल सेना	: शं नो वरुण:
10.	भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी	: हवयाभिर्भग: सवितुर्वरिण्यं
11.	भारतीय प्रसाशनिक सेवा अकादमी	: योग: कर्मसुकौशलम्
12.	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0	: विद्ययऽमृतमश्नुते
13.	नेशनल कौन्सिल फॉर टीचर एजु.	: गुरु: गुरुतमोधाम
14.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन	: तत्वं पूषन्नपावृणु
15.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	: असतो मा सद्गमय
16.	दिल्ली विश्वविद्यालय	: निष्ठा धृति: सत्यम्

– शेष पृष्ट 7 पर

जम्मू-कश्मीर में भीषण दैवीय आपदा : जन-धन की भारी हानि : सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने किया दौरा

श्रीनगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर बाढ़ भी बाढ़ की चपेट में : आर्य संस्थाओं को भारी नुकसान

जम्मू एवं उधमपुर के कई गांव भी आपदा से प्रभावित

मानव सेवा कार्यों में सहयोग हेतु आगे आएं आर्यजन – प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्व.सभा

उधमपुर के पज्जर और सद्दल गांवों में जम्मू की आर्यसमाजों द्वारा तात्कालिक राहत कार्य आरम्भ : आर्यसमाज बक्शी नगर जम्मू में बनाया गया राहत सामग्री संग्रह केन्द्र

जम्मू कश्मीर में बरसात एवं बाढ़ के रूप में आई दैविक आपदा पर सारा राष्ट्र एक साथ है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जहा बचाओं एवं राहत कार्य आरम्भ किये जा रहे हैं वहां आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्वाधान में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा सेवा कार्य आरम्भ करने का निर्णय लिया है। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी की अध्यक्षता में अहमदाबाद में गत दिनों सम्पन्न हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार जम्मू-कश्मीर के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की स्थिति का अवलोकन करने के लिए सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली सभा के अधिकारी 17 सितम्बर की प्रात: जम्मू पहुंचे। अधिकारियों ने जम्मू-कश्मीर सभ के अधिकारियों के साथ उधमपुर के क्षेत्रों का भी सर्वेक्षण किया। यहां के गांव पज्जर और सद्दर तथा कई अन्य गांव पहाड़ गिरने से पूरी तरह ध्वस्त हो चुके हैं तथा इन दो ही गांवों में 40-50 लोग काल का ग्रास बने हैं।

इस क्षेत्र में जम्मू-कश्मीर सभा के पदाधिकारियों प्रधान श्री भारत भूषण आर्य, उप प्रधान श्री राकेश आर्य, मन्त्री श्री रविकान्त एवं कोषाध्यक्ष श्री योगेश गुप्ता ने अन्य सदस्यों के साथ मिलकर राहत सामग्री का वितरण भी किया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने, उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कश्मीर सभा के पदाधिकारियों ने स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों से मिलकर लम्बे समय तक राहत कार्यों को संचालित करने की मांग करते हुए कहा कि आर्यसमाज क्षेत्र के पुनरुत्थान में हर सम्भव सहयोग करेगा।

सायंकाल 4 बजे आर्यसमाज बक्शी नगर में अत्यावश्यक बैठक हुई जिसमें जम्मू एवं उधमपुर के कुछ क्षेत्रों को चयनित करके राहत एवं सेवा कार्य आरम्भ करने तथा उसके तरीकों पर विचार किया गया।

बैठक में सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य एवं जम्मू-कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भारतभूषण गुप्ता, उप प्रधान श्री राकेश आर्य, मन्त्री श्री रविकान्त आर्य, कोषाध्यक्ष श्री योगेश आर्य एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग

– शेष पृष्ट 8 पर

वेद-स्वाध्याय

यज्ञ किसलिए करें?

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसां भागोऽसि।। यजुर्वेद : २/२३

अर्थ—**(कः)** कौन सुख चाहने वाला पुरुष **(त्वा)** उस यज्ञ को **(विमुञ्चति)** छोड़ता है। जो यज्ञ को छोड़ता है **(त्वा)** उसको **(सः)** यज्ञ का पालन करने वाला परमेश्वर भी **(विमुञ्चति)** छोड़ देता है। [यज्ञकर्त्ता] **(कस्मै)** किस प्रयोजन के लिये अग्नि में यज्ञिय पदार्थों की आहुति देता है, **(तस्मै पोषाय त्वा विमुञ्चति)** जिससे सब सुखों की प्राप्ति और पुष्टि होवे, इसके लिये पदार्थों की अग्नि में आहुति देता है। जो **(त्वा विमुञ्चति)** उस यज्ञ को छोड़ देता है उसे **(सः त्वा विमुञ्चति)** वह यज्ञ-पुरुष परमेश्वर भी छोड़ देता है। ईश्वर के छोड़ देने पर वह मानव विविध कष्टों को भोगता है। **(रक्षसां भागोऽसि)** जो पदार्थ सब के उपकार के लिये यज्ञार्थ प्रयुक्त नहीं किया जाता वह राक्षसों का भाग है। मन्त्र में प्रश्नोत्तर द्वारा यज्ञ करने के लाभ और न करने से हानि को बतलाया है।

१. यज्ञ के लाभ—कस्त्वा विमुञ्चति, कस्मै त्वा विमुञ्चति.... पोषाय—यज्ञ में आहुति इसलिये दी जाती है कि जिससे पुष्टि होवे। पुष्टि से अभिप्राय अन्न, धन की वृद्धि, आरोग्य और पर्यावरण की शुद्धि से है। यज्ञ में सुगन्धित, पुष्टिकारक रोगनाशक द्रव्यों की आहुतियाँ दी जाती हैं। आहुत द्रव्य सूक्ष्म होकर जल और वायु की शुद्धि करता है। शुद्ध जल बरसने से पुष्टिदायक अन्न की उत्पत्ति होती है जिसके सेवन से उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसलिये मन्त्र में **पोषाय** अर्थात् यज्ञ को पुष्टिकारक कहा है। गीता में कहा है—

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥ गीता ३.१०-११॥

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में प्रजाओं की रचना कर उनसे कहा कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति करे। तुम यज्ञ के द्वारा देवों की पूजा और वृद्धि करो और वे जड़-चेतन दोनों प्रकार के देव तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति करें। इस प्रकार एक दूसरे को उन्नत करते हुए तुम परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे।

यज्ञ वर्षा का निमित्त है। यजुर्वेद में कहा है—**वर्षवृद्धमसि** (१.१६) यज्ञ वृष्टि की वृद्धि का हेतु है। **पृश्निभूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह** (यजुः० २.१६) यज्ञ में दी गई आहुति अन्तरिक्ष में स्थिर हो सूर्य के प्रकाश को प्राप्त होती है और वहाँ से वर्षा को लाती है। यज्ञ का धूम बादलों के वाष्प को जमाने में केन्द्रक का कार्य करता है।

आजकल यज्ञ चिकित्सा पर अनुसंधान हो रहा है। अनेक रोग यज्ञ में औषध विशेष के द्रव्यों की आहुति देने से ठीक हो रहे हैं। श्वास के साथ हुत द्रव्य का सूक्ष्मतम भाग शरीर में जाकर सम्बन्धित रोग के लक्षणों को समाप्त कर देता है। अनेक रोगों के जीवाणु यज्ञ-धूम से नष्ट हो जाते हैं। दुर्गन्ध का नाश होता है।

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति का अभिप्राय यह भी है—जो यज्ञ-परोपकारादि को छोड़ देता है, उसको यज्ञ का स्वामी परमात्मा भी त्याग देता है। परमात्मा स्वयं यज्ञरूप है जिसने प्रकृति के परमाणुओं की संगति करके सुन्दर सृष्टि का निर्माण किया है। उसकी बनाई हुई सृष्टि में स्वयं यज्ञ हो रहा है। मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों द्वारा उत्सर्जित कार्बन डाय आक्साइड को पौधे अपना भोजन बना रहे हैं और आक्सीजन का उत्सर्जन कर रहे हैं। समुद्र का जल वाष्प में परिवर्तित होकर वर्षा द्वारा सबकी प्यास बुझा रहा है। मल-मूत्र की खाद पौधों एवं फसलों की वृद्धि करने वाली है। ईश्वरीय व्यवस्था से प्रकृति में यह यज्ञचक्र प्रवर्तित हो रहा है। यज्ञ एक ऐसा दान है जिसकी सुगन्ध से जड़-चेतन सभी लाभान्वित होते हैं। इसीलिये कहा है—**जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।**

व्यापक स्वरूप वाला यज्ञ सब प्रकार की पुष्टि करता है—

सं वर्चसा पयसा सन्तनूभिर गन्महि मनसा सꣳशिवेन। त्वष्टा सुदत्रा विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो॒ यद्विलिष्टम्॥ यजुः० २.२४॥

विद्यारूप ज्ञान यज्ञ से (वर्चसा) वेदज्ञान को प्राप्त होवें। (मनसा शिवेन) योग यज्ञ से मन, बुद्धि की शान्ति होवे। (तनूभिः) द्रव्य यज्ञ से शरीर स्वस्थ रहे और (त्वष्टा) पदार्थों को सूक्ष्म छेदन-भेदन करने वाला यज्ञ (सुदत्र) सर्वविध सुखों को देने वाला और (रायः) सभी ऐश्वर्यों को (विदधातु) प्राप्त कराने वाला है तथा (तन्वः यद् विलिष्टम्) शरीर में जो भी न्यूनता है उसे (अनुमार्ष्टु) ठीक कर देता है।

२. रक्षसां भागोऽसि जो अपना ही पेट भरने की सोचते हैं वे 'असुर' और दूसरों के कार्यों में बाधा पहुँचाने तथा घात-पात करने वाला 'राक्षस' कहलाता है। राक्षस या असुर कौन हैं यह मन्त्र बतला रहा है—

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरोनिपुरा ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्य स्मात्॥ यजुः० २.३०॥

ये जो दुष्ट मनुष्य (रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः) अपने भावों को दूसरों के सामने छिपाते हुये (असुराः सन्तः) धर्म के विध्वंसक, अपने भावों को दूसरों के सामने छिपाते हुये (असुराः सन्तः) अपना पेट भरने में तत्पर (स्वधया चरन्ति) पृथिवी पर विचरण करते हैं वे (परापुरः) अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए यत्नशील और (निपुरः भरन्ति) अपने दुष्टभावों की पूर्ति में संलग्न हैं, उन लोगों को (अग्निः) परमेश्वर (अस्मात् लोकात् प्रणुदाति) इस संसार से दूर करे।

केवलाघो भवति केवलादी = अकेला खाने वाला पापी होता है। जहाँ देवता पहले दूसरों को खिलाकर फिर स्वयं खाते हैं वहाँ असुर सर्वप्रथम अपना पेट भरने की फिराक में रहते हैं।

'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये' आर्यसमाज का यह नियम इसी कथन की पुष्टि कर रहा है। जो कार्य सबकी उन्नति या कल्याण का है उसमें यदि अपनी कुछ हानि भी होती हो तो उसे भी सहन कर लेना चाहिये। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना यही दिव्य भावना है जो मनुष्य को देवत्व के पद पर आरूढ़ कर देती है।

देवो दानात्=जो देता है वह देव कहलाता है। जड़ और चेतन दो प्रकार के देव हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि जड़ देव हैं जो हमें जीवनोपयोगी पदार्थों को उपलब्ध कराते हैं। माता-पिता, गुरु, आचार्य चेतन देव हैं जो जीवन किस भाँति जिया जाये इसका उपदेश करते हैं। देवों का देव होने से परमात्मा महादेव है। ये सब देव परोपकार में संलग्न हैं तब हमारा भी यह कर्त्तव्य बन जाता है कि हम भी देने वाले बनें। अपने ही स्वार्थ की न सोचें। अपना पेट तो पशु भी भरते हैं। यज्ञादि उत्तम कर्म देवता बनने के लिये ही किये जाते हैं।

- क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

समस्त ब्रह्माण्ड की भाषा है। यह तथ्य अमेरिका के राष्ट्रीय वैमानिकी एवं अंतरिक्ष विज्ञान व्यवस्थापक **(नासा)** ने अपने प्रयोगों के द्वारा सिद्ध कर दी है। अतः संस्कृत के अध्ययन से ही हम विशाल 'ज्ञान-भण्डार' को संरक्षित और संवद्धित कर सकते हैं अन्य किसी माध्यम से यह सम्भव नहीं है।

अतः इस उद्देश्य को पूर्ण एवं फलीभूत करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा **"गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम्"** नामक संस्कृत अध्ययन-अध्यापन हेतु एक वृहद् संस्था का संचालन कर रही है जिसमें संस्कृत विद्वानों के द्वारा पाठ्यक्रम को सरल, सुबोध एवं मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्यापन कार्य कराया जाता है। सभा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों का साकार करने हेतु यह महान कदम उठाया है।

अतः हम सब का भी कर्त्तव्य बनता है कि हम संस्कृत का पठन-पाठन अवश्य करें तथा संस्कृत पठन-पाठन हेतु सरल एवं मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम पर आधारित साहित्य दिल्ली सभा के पुस्तक विक्रय केन्द्र से अल्प मूल्य दर पर प्राप्त करें जिसके द्वारा हम घर पर ही स्वयं पढ़े और अपने बालकों को भी पढ़ायें जिससे अल्प समय एवं परिश्रम से संस्कृत का अच्छा ज्ञान तो होगा ही अपितु सत्य वेदादि शास्त्रों को पढ़ने में रूचि बढ़ेगी तथा **संस्कृत के ज्ञान-विज्ञान का संरक्षण एवं संवर्द्धन** भी होगा। संस्कृत विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है इस परिप्रेक्ष्य में संस्कृत की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का विवरणात्मक अध्ययन निम्न प्रकार है:-

(1.) प्राचीनतम भाषा - विश्व की सभी मुख्य भाषाओं का प्रादुर्भाव 2500 वर्ष से पूर्व का नहीं है जबकि संस्कृत का इतिहास अरबों वर्ष पुराना है चूंकि वेद का समय भी इतना ही है।

(2.) साहित्य सृजन - संसार में संस्कृत भाषा की साहित्य सृजन क्षमता सबसे अधिक है इसका बृहद् विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र है जबकि कुछ (दुर्लभ साहित्य) किन्ही कारणों से जिसका हम संरक्षण नहीं कर पाए अब विद्यमान नहीं है।

(3.) शुद्धता की कसौटी - (अ) संसार का कोई भी अन्य भाषा-भाषी व्यक्ति संस्कृत का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता परन्तु एक संस्कृत भाषी (संस्कृत पढ़ा लिखा) व्यक्ति किसी भी भाषा को शुद्ध रूप से पढ़, लिख व बोल सकता है। इस सम्बन्ध में सिनेमा जगत् की महान पार्श्व-गायिका लता मंगेशकर जी का कथन प्रस्तुत करना समीचीन होगा। उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा था कि- 'मैं मराठी भाषी हूँ और बचपन में मुझे हिन्दी बोलने में, पढ़ने में कठिनाई होती थी तो मेरे पिताजी ने एक संस्कृत अध्यापक घर पर संस्कृत पढ़ाने के लिए नियुक्त कर दिए जब मैं संस्कृत पढ़ने लगी तो उसके बाद मुझे शुद्ध हिन्दी बोलने अथवा गाना गाने में सरलता हो गयी।'

(ब) महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतंत्रता के अग्रदूत, भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक वेदों के उद्धारक जो गुजरात की पृष्ठभूमि से जुड़े हुए थे उन्होंने अपने साहित्य की रचना का आधार संस्कृत भाषा को बनाया जो आज भारत में ही नहीं विश्व में एक क्रान्ति बन चुकी है।

(4.) यथास्थिति उच्चारण व्यवस्था - संस्कृत भाषा में शब्द को जैसा लिखा जाता है वैसा ही उसका उच्चारण किया जाता है। जैसे हंस और हँस, इन दोनो का उच्चारण भी भिन्न है और अर्थ भी। (हंस = एक पक्षी, हँस = हँसना शरीर की एक क्रिया) जबकि अंग्रेजी आदि भाषाओं में यह विशेषता नहीं है। जैसे Knoght (नॉट)= गांठ, Night (नाईट) = रात यहाँ पर gh की कोई ध्वनि नहीं है, वह मूक

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज : अंगारे पर घेरती राख

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

भारतवर्ष के इतिहास में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नव-जागरण का आरम्भ होता है ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि कई सामाजिक सुधार और जनजागरण करने के संगठन बने। बंगाल में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय अधिक प्रभावशाली प्रमाणित हुए, उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने, सती प्रथा आदि रोकने का प्रशंसनीय कार्य किया। ब्रह्म समाज की निर्बलता यह थी कि राजा राममोहन राय अंग्रेजी शासन और अंग्रजी भाषा को भारतवर्ष की उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे। इसका फल यह हुआ कि ब्रह्मसमाज भारत की साधारण जनों की मानसिकता को अपने प्रभाव में न ले सका क्योंकि इसका प्रेरक तत्त्व विदेशी था।

ब्रह्मसमाज के कुछ वर्षो के पश्चात् सन् 1875 ई० में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को स्वामी दयानंद सरस्वती ने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की, स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की चिंतनधारा वेद, शास्त्र, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, भगवान् श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि भारतीय ऐतिहासिक विरासत का प्रचार करने लगी। आर्य समाज सुधार की वाणी बोलता था किन्तु इसकी कार्यशैली में बहु-आयामी क्रांति का शंखनाद था। यह वैचारिक क्रान्ति दैवी ज्वाला की तरह भारतवर्ष के बाहर यूरोप, अमेरिका, कनाडा, अरब, अफ्रीका आदि में फैल गयी। अमेरिका के प्रसिद्ध विचारक डॉ. एंड्रयू जैक्सन डेविस ने कहा है - "मैं एक ऐसी अग्नि को देखता हूँ जो सर्वव्यापक है, वह अप्रमेय प्रेम कि अग्नि है, जो सर्वविद्वेष को भस्मसात् करने के लिए प्रज्वलित हो रही है। वाङ्मयी, कवियों और पवित्र पुस्तक-प्रणेताओं के मनोभावों के रुप में उसकी लपकती ज्वालायें यत्र-यत्र दृष्टिगोचर हो रही हैं। आर्य समाज नामक अग्निकुण्ड में यह अग्नि प्रकट हुई है। ईश्वर के प्रकाश से ज्योति प्राप्त करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के हृदय में यह अग्नि प्रादुर्भूत और प्रज्वलित हुई थी। मुसलमान और ईसाई, सब इस अग्नि को बुझाने के लिए दौड़े किन्तु यह अग्नि भारतवर्ष में और भारतवर्ष के बाहर भी बढ़ती और फैलती ही गयी।" उस समय भारतवर्ष में म्यांमार (बर्मा), सिंगापुर, इंडोनेशिया आदि सब में यह सुधार की ज्वाला फैल गई, इस समय संसार के प्राय: सभी देशों में और प्रमुख शहरों में आर्य समाज का संगठन कार्य कर रहा है।

अफ्रीका के कई देशों में, टापुओं में, मॉरिशस, फिजी, गुयाना, केन्या आदि में जहाँ भारतीय मूल के लोग बसे हैं, वहां आर्य समाज अत्यंत प्रभावपूर्ण धार्मिक और सामाजिक कार्य कर रहा है। आर्य समाज के प्रभाव में इस्लामी जगत भी इतनी निष्ठां से सम्मिलित हुआ था कि खलीफाओं के देश प्रसिद्ध नगर बगदाद के आर्य समाज ने उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को एक हजार रुपये सहयोग में दिए थे जिसका मूल्य आज के दिन लाखों का होगा और इन्हीं रुपयों से सार्वदेशिक सभा ने सन् 1924 ई० में आर्य पर्व-पद्धति पुस्तक छापी थी। यह तो अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति ने ईसाई और मुसलमानों को आर्य समाज का विरोधी बना दिया।

आर्य समाज के कार्य बहुमुखी रहे हैं, समाज सुधार, छुआ-छूत को मिटाना, जातिगत, जन्मना ऊँच-नीच के भाव को मिटाना, बाल-विवाह रोकना, विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना, कन्याओं के लिए स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल खोलना, अछूतों, जनजातियों आदि सभी पिछड़े हुए वर्गों को बिना किसी भेदभाव के स्कूल, कॉलेज और गुरुकुलों में स्थान देना, वेद-वेदांग के अध्यापन के लिए गुरुकुल खोलना, आदि सब आर्य समाज के प्रोग्राम में है। आर्य समाज ने म्रियमाण हिन्दू जाति को संजीवनी बूटी पिला दी। आर्य समाज से पहले ईसाई मिशनरी और इस्लामिक प्रचारक हिन्दू देवी-देवताओं की खुलेआम भर्त्सना करते थे। और हिन्दुओं को बिना किसी बाधा के धर्मान्तरित कर रहे थे। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के प्रचारक हिन्दुओं की रक्षा तो करने ही लगे, साथ ही अन्य मतावलंबियों को पुन: हिन्दू भी बनाने लगे। उस समय आर्य समाज जनमानस में अग्निपिण्ड की तरह दहक रहा था।

आर्य समाज का विरोध : आर्य समाज के विरोध में कट्टरपंथी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सभी टूट पड़े. आर्य समाज अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी माध्यम, अंग्रजी सभ्यता संस्कृति, सबका विरोध करता था। अत: सबसे पहले अंग्रेजी सरकार ने आर्य समाज को दबाने का प्रयास किया। शासन की ओर से कई जगह कई अभियोग चलाये गए किन्तु सर्वत्र आर्य समाज विजयी रहा। आर्य समाज ने कई धार्मिक युद्ध किये। निजाम हैदराबाद के शासक ने हिन्दुओं पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये थे और अनेक प्रकार से हिन्दुओं को वहां पीड़ित किया जाता था। 1937 में आर्य समाज ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह किया और कई सत्याग्रहियों के वलिदान के पश्चात् निजाम सरकार ने घुटने टेक दिए और निजाम हैदराबाद के राज्य में हिन्दुओं को धार्मिक अधिकार प्राप्त हुए। इस विजय से आर्य समाज की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी। 1947 के स्वतंत्रता के समय सिंध प्रान्त में मुस्लिम लीग की सरकार थी। उसने स्वामी दयानन्द के महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा की। इस पर आर्य समाज ने सिंध सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया। इससे सिंध की लीगी सरकार घबरा उठी और उसने प्रतिबन्ध का आदेश वापस ले लिया। इससे भी आर्य समाज का गौरव बढ़ गया। स्वतंत्र भारत में नेहरु जी की प्रेरणा से पंजाब में कैरों सरकार ने हिन्दी भाषा के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाया और आर्य समाज ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन छेड़कर सत्याग्रह किया, इसमें भी आर्य समाज सफल रहा। ये सब बाहरी विरोध थे। इन्हें आर्य समाज ने बड़े उत्साह से दबा दिया।

टिप्पणी : आर्य समाज अत्यंत सेवदनशील संगठन है अपने गुणों से मुखरित व्यक्ति आर्य समाज के सम्पर्क में आता है जो राष्ट्र के प्रति सच्ची निष्ठा रखता है। लेकिन जबसे आर्य समाज के तेजस्वी व ओजस्वी नेताओं ने राजनीति में प्रवेश किया तो उसी वातावरण में रम गए तथा इस लाभ को लेनें के लिए अन्य मौका परस्त लोग भी समाज में घुसकर अपनी राजनैतिक छवि बनाने में संलग्न रहे तथा समाज के वास्तविक उद्देश्य से भटक गए और इस परिस्थिति में आर्य समाज रूपी अंगारे पर राजनैतिक परिवेश रूपी राख डालकर अग्नि बुझाने का कार्य किया अर्थात आर्य समाज का प्रचार व प्रसार नाम मात्र रह गया। - सम्पादक

आन्तरिक प्रतिकूलता : (1) बाहरी विरोधों को लड़कर दबाया जाता है किन्तु आतंरिक प्रतिकूलताएँ दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। कांग्रेस के प्रसिद्ध इतिहासकार लेखक श्री पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कांग्रेस में लगभग 80% लोग आर्य समाज से प्रभावित थे। उस समय देश को प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें बनाने के लिए तपे-तपाये ईमानदार देश-सेवक नेताओं की आवश्यकता थी। इस प्रशासनिक आवश्यकता ने आर्य समाज के प्रथम कोटि के बहुत सारे नेताओं को सरकार में ले लिया। इतनी बड़ी संख्या में प्रथम कोटि के कार्यकर्ताओं का शासन द्वारा अपहरण (हाइजैक) किये जाने ने आर्य समाज के संगठन पर आंतरिक राख का काम किया और आर्य समाज के अंगारे पर मलिनता का प्रभाव डाला। (2) नकली सिक्के असली मूल्यवान सिक्कों को प्रचालन से हटा देते हैं। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का देश में बड़ा सम्मान था। न्यायालय भी कई बार आर्य समाजियों की सच्चाई, ईमानदारी पर मुहर लगा देते थे। इस सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रलोभन में कई नकली दिखावटी नेता आर्य समाज के नेतृत्व में घुस आये। आर्य समाज अत्यंत जनतांत्रिक संगठन है और ये दिखावटी आर्य समाज आर्य समाज के संगठन पर हावी होकर अधिकार में आ गए। इसने भी आर्य समाज के तेज को धूमिल किया. (3) त्यागी, संन्यासी, विद्वान समाज सेवक अधिकारियों की जगह स्वार्थी, पद लोलुप लोगों का समाज पर आधिपत्य बढ़ने लगा. (4) दलबन्दी की दलदल में आर्य समाज का संगठन फँस गया। जब दलबंदी सीमारेखा पार कर जाती है तब संगठन अपने मूल उद्देश्य से भटक कर स्वार्थो में उलझ जाता है। इसी में संगठन का वर्चस्व धूमिल हो जाता है। (5) सेवा करने की जगह मेवा-भोगी कार्यकर्त्ता नेता कुर्सी-चिपक बन कर संगठन को अपने निजी स्वार्थों में, निजी प्रतिष्ठा में भुनाने लगते है। (6) कहीं-कहीं समाज की अचल संपत्तियों को बेचकर तथा आर्य समाज के भवनों, अतिथिशालाओं आदि का आर्थिक रुप से दुरुपयोग करने वाले कई लोग संगठन में प्रभावी हो गए हैं। (7) सबसे बढ़कर तेजस्वी नेतृत्व का अभाव आर्य समाज रुपी अंगारे पर राख चढ़ा रहा है।

इतनी सारी प्रतिकूल परिस्थितियों के रहने पर भी एक स्वर्णिम किरण से यह आशा दिखती है की दो-चार सौ नियंत्रण करने वाले नेताओं को छोड़कर लगभग सारा आर्य समाज संगठन ऋषि दयानन्द और उनके सिद्धांतो के प्रति ईमानदारी से निष्ठावान है।

- ईशावस्यम्, पी - 30, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम, कोलकाता - 700089.

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सम्पादकीय टिप्पणी : वैदिक साहित्य में सोमरस विविध अर्थों में प्रयोग हुआ है जहां सोम का अर्थ औषधि तथा सोमरस का अर्थ अनेक औषधियों का रस (मिश्रण) के लिए भी ग्रहण होता है तथा सोम का अर्थ विद्वान और सोमरस का अर्थ ज्ञान भी ग्रहण किया जाता है न कि मद्यादि के लिए।

विद्वानों की दृष्टि में सोमरस

– महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द ने अपने भाष्यों में सोम का निर्वचन मुख्य रूप से तीन धातुओं से किया है। सु (षु षुञ् अभिषवे स्वादि0) से प्राय: औषध, सोमलता के समान आह्लादक आसव, रोगनाशक महौषधि (सोम) का रस, सोमलता के समान सब रोगों (कष्टों) के नाशक राजादि अर्थ सोम के लिए किए गए हैं (**वैद्यकशिल्पक्रियाया संसाधित ओषधीरस:**(ऋ1/47/1), **सोमवल्लयादि निष्पन्नमाह्लादकमासव विशेषं** (वा0 सं08/10), **सर्वरोगनाशकं महौषधि रसम्-द्वितीया** (ऋ03-53-6), **सोम वल्लीव सर्वरोगविनाशक** (राजन्) वा0सं034-22)। यास्क ने भी इसी धातु से निर्वचन करते हुए इसका अर्थ औषधि (सोम) किया है (**ओषधि: सोम: सुनोतेर्यदेनमभिषुण्वन्ति।** (नि0 11-2) सू (षु प्रेरणेतुदादि0) से सोम का अर्थ सबको शुभ कर्मों और गुणों की प्रेरणा देने वाला परमेश्वर अथवा विद्वान किया गया है (**शुभकर्मगुणेषु प्रेरक**) (परमेश्वर विद्वान् वा) (ऋ01-91-3)। सु (षु प्रसवैश्वर्यो: भ्वादि0) से सोम का अर्थ सारे चराचर को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर तथा ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर दोनों ही है (**सुवति चराचरमं जगत्।** वा0सं03-56, ऋ01-91-12)। सोमलता या उत्तम औषध के आह्लादक गुण को देखते हुए सम्भवतया महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ 'आनन्द' भी किया है। एक स्थल पर यजमान प्रतिज्ञा करता है कि मैं ईश्वर के उस सर्वत्र व्याप्त यज्ञ को आनन्द से हृदय में दृढ़ करता हूँ (**इन्द्रस्य परमेश्वरस्य तं भजनीयं यज्ञं सोमेनानन्देन दृढ़ीकरोमि।** वा01-1-4) भावना यह है कि यज्ञानुष्ठान् करते हुए मैं असुविधा नहीं अपितु आनन्द का अनुभव करता हूँ। महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में सोम के अर्थ जगदीश्वर, विद्वान्, मनुष्य, राजा, सेनाध्यक्ष, संन्यासी, वैद्य, सोम नामक ओषधि, सोम औषधि का रस, सोम आदि ओषधियों से बनाया आसव, आनन्दरस, वीररस आदि किए है।

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक 'विद्या मार्तण्ड' जी ने अपने भाष्यों में जीवन रस व ज्ञानमार्ग, उपासना रस, शान्तस्वरूप परमात्मा, मोक्षानन्द रस, अमृतपान-स्थान, सौम्य स्वभाव उपासक अर्थ किया है। आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जी ने जीव, आनन्द, भोग्य पदार्थ, ऐश्वर्यकारी, परमेश्वर, आनन्दमय परमेश्वर, शान्त स्वरूप परमेश्वर, आत्मा, सोमरस, शान्त स्वभाव वाले, सूर्य, शान्त विचार वाला भक्तजन, ज्ञान प्राप्ति का स्थान, आत्मज्ञानी, सौम्य स्वभाव वाला, आत्मबल के रक्षक, सच्चा न्याय, गृहस्थ आश्रम, शास्त्र बोध, शास्त्रीय ज्ञान, उत्पन्न संसारी पदार्थ, ज्ञानी पुरूष शरीर रक्षा, विद्वान् पुरूष, सोमलता आदि वनस्पति, वायु, पुरूष, प्राणी, आनन्दरस, बोध, वायु, उत्तम पदार्थो के रक्षक, संसार के भोग, ऐश्वर्य, ऐश्वर्य-शक्ति, संसार, शान्त गुण वाला आदि अर्थ किए हैं। पण्डित तुलसीराम स्वामी जी ने चन्द्रमा, सौम्य-भक्त, औषधि विशेष का रस, शान्तस्वरूप परमेश्वर, औषधि वा परमात्मा, सोमरस, अमृतस्वरूप परमेश्वर, सेवन किया हुआ परमेश्वर, परमात्मा रूपी अमृत, अमृत, औषधिरस, आत्मिकानन्द, सोमरस, सोमौषधि वा शान्तात्मा, प्रसिद्ध चौबीस प्रकार के सोम, औषधिराज, शान्तामृतस्वरुप परमात्मा, कोमल हृदय, शान्तिधाम, औषधिगण, सेना का प्रेरक आदि अर्थ किए हैं।

इस लेख में हम विशेषत: डा0 रामनाथ वेदालंकारजी का चिन्तन प्रस्तुत कर रहे हैं। वे अपनी पुस्तक 'ऋग्वेद ज्योति' में सोम के सम्बन्ध में लिखते हैं-ऋग्वेद नवम् मण्डल में 1108 ऋचाएं है, जिनमें से सूक्त 5 की 11, सूक्त 66 की 3 और सूक्त 67 की 8 ऋचाओं को छोड़कर शेष 1086 का देवता पवमान सोम है। इनके अतिरिक्त प्रथम मण्डल में 23, तृतीय में 3, षष्ठ में 5, सप्तम् में 3, अष्टम् में 25 और दशम में 16 ऋचाएं सोम देवता की हैं। साथ ही अनेक ऋचाएं ऐसी हैं, जिसका देवता यद्यपि इन्द्र है, तथापि उसे सोमपान का निमन्त्रण दिया गया है, अत: वे भी सोम से सम्बद्ध हैं। पवमान सोम तथा सोम देवता यद्यपि है पृथक-पृथक तथापि यहां हम उन पर एक साथ ही विचार कर रहे हैं।

यास्क ने ओषधिविशेष अर्थ में सोम शब्द षुञ् अभिषवे धातु से निष्पन्न किया है, यत: उस औषधि से रस निचोड़ा जाता है-**ओषधि: सोम: सुनोते:, यदेन माभिषुण्वन्ति** (निरू011-2)। उणादिकार सु (**षु प्रसवैश्वर्ययो: षुञ् अभिषवे**) धातु से मन् प्रत्यय करते हैं-**अर्तिस्तु सुहुसृधृक्षिक्षु भायावापदियक्षिनीन्यो मन्।** (उ01-140)। स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में सोम के अर्थ जगदीश्वर, विद्वान, मनुष्य, राजा, सेनाध्यक्ष, संन्यासी, वैद्य, सोम नामक ओषधि, सोम औषधि का रस, सोम आदि ओषधियों से बनाया आसव, आनन्दरस, वीररस आदि किए हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में-(**सोमो वै ब्राह्मण:** (तां023-16-5), **क्षत्रं सोम:** (ऐ02-28), **यशो वै सोम:** (शत0 4-2-4-9), **श्रीर्वै सोम:** (श04-1-3-9), **प्राण: सोम:** (शत07-3-1-2), **रेत: सोम:** (कौ013-7) ब्राह्मण, क्षत्र, यश, श्री, प्राण, रेतस् आदि को भी सोम कहा गया है।

पवमान का अर्थ है पवित्र करने वाला (**पूङ् पवने, भ्वादि**) अथवा बहने वाला (**पवते गतिकर्मा,** निघं0 2-14)। सोम परमात्मा से आनन्द-रूप सोमरस और सोम ओषधि से ओषधि-साररूप सोमरस प्रवाहित होता है- **स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुत:।।** (9-1-1)'

आगे उन्होंने विभिन्न अर्थों में सोम के कुछ मंत्र इस प्रकार दिए हैं-

जगदीश्वर

त्वमिमा ओषधी: सोम विश्वा स्त्वमपो अजनयस्त्वं गा:।त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।। (ऋ01-91-22)

(**सोम**) हे जगदीश्वर, (**त्वम्**) आपने (**इमा: विश्वा: ओषधी:**) इन सब औषधियों को, (**त्वम्**) आपने (**अप:**) जलों को, (**त्वम्**) आपने (**गा:**) गायों, भूमियों, किरणों आदि को (**अजनय:**) जना है। (**त्वम्**) आपने (**आ ततन्थ**) फैलाया है (**उरू अन्तरिक्षम्**) विस्तीर्ण अन्तरिक्ष को। (**त्वम्**) आप (**ज्योतिषा**) ज्योति से (**तम:**) अन्धेरा एवं तामसिकता (**वि ववर्थ**) निवारण करते है।

ब्रह्मानन्द

हमने (**अपाम**) पी लिया है (**सोमम्**) ब्रह्मानन्द का रस। हम (**अमृता:**) अमर (**अभूम**) हो गए है। हमने (**अगन्म**) पा ली है (**ज्योति:**) ज्योति, (**अविदाम**) पा लिया है (**देवान्**) दिव्य गुणों को। (**किं नूनम्**) क्या भला (**अस्मान्**) हमें (**कृणवत्**) हानि पंहुचा सकेगी (**अराति:**) अदान-भावना, कृपणता, (**किमु**) और क्या हानी पंहुचा सकेगी (**अमृत**) हे मेरे अमर आत्मा, (**मर्त्यस्य**) मनुष्य की (**धूर्ति:**) धूर्तता, हिंसा?

चन्द्रमा

त्वं सोम पितृभि: संविदानो ऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ। (ऋ08-48-13)

(**सोम**) हे चन्द्र! (**पितृभि: संविदान:**) पालक सूर्य-किरणों से संयुक्त हुआ (त्वम्) तू (**द्यावापृथिवि अनु**) आदित्य और भूमि के मध्य में (**आ ततन्थ**) स्वयं को विस्तीर्ण कर लेता है। (तब सूर्य ग्रहण होता है।

वैद्य

अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम्। प्रेमन्ध: ख्यन्नि: श्रोणो भूत्।। (ऋ08-79-2)

वैद्य सोम (**यत् नग्नम्**) जो नग्न निस्तेज शरीर है, उसे (**अभ्यूर्णोति**) तेज से आच्छादित कर देता है। (**यत् तुरम्**) जो आतुर, रूग्ण शरीर है (**विश्वम्**) उन सबका (**भिषक्ति**) इलाज करता है। उसके इलाज से (**अन्ध: ईम्**) अन्धा भी (**प्रख्यत्**) प्रकृष्टरूप से देखने लगता है, और (**श्रोण:**) लंगड़ा (**नि: भूत्**) निर्गमन करने, चलने-फिरने में समर्थ हो जाता है।

राजा

अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमाती: सहमान:। सोम सधस्थमासदत्।। (ऋ03-62-15)

(**अस्माकम्**) हम प्रजाजनों की (**आयु:**) आयु (**वर्धयन्**) बढ़ाता हुआ, (**अभिमाती:**) अभिमानी शत्रुओं को (**सहमान:**) पराजित करता हुआ (**सोम:**) रचनात्मक कार्यों का कर्ता राजा (**सधस्थम्**) राज-दरबार में (**आ सदत्**) आकर बैठा।

सेनाध्यक्ष

प्र सेनानी: शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना। भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्तसखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते।। (ऋ09-96-1)

(**शूर:**) शूर (**सेनानी:**) सेनाध्यक्ष (**रथानाम्**) रथारोहियों के (**अग्रे**) आगे-आगे (**गव्यन्**) शत्रु की भूमियों को जीतना चाहता हुआ (**प्र ऐति**) प्रयाण करता है। (**हर्षते**) उत्साहित होती है (**अस्य सेना**) उसकी सेना। (**सखिभ्य:**) सखा सैनिकों के लिए (**इन्द्रहवान्**) युद्ध के नारों को (**भद्रान् कृण्वन्**) भद्र एवं सुखकारी करता हुआ (**सोम:**) सेनाध्यक्ष (**वस्त्रा**) वस्त्रों के समान रक्षक (**रभसानि**) वेगों को (**आदत्ते**) ग्रहण करता है।

अपनी पुस्तक 'आर्ष ज्योति' में सोम के सम्बन्ध में लिखते हैं - 'ऋग्वेद में 11 वार स्पष्ट रूप से सोम को वृषभ कहा गया है। वृषभ सोम का रेतस् (रस) पाकर वत्स की मातृभूत धीतियां शब्दायमान हो जाती हैं (ऋ09-19-4)। जैसे भयंकर वृषभ बल दिखाने की इच्छा से अपने श्रृंगों को तीक्ष्ण करता हुआ दहाड़ता है, वैसे ही सोमरूप वृषभ भी अपने डंठल-रूपी हरे-हरे सींगों को सिल-बट्टों पर तीक्ष्ण करता हुआ शब्द करता है (ऋ09-70-7)। जैसे वृषभ गोयूथ में जाता है, वैसे ही सोमरूप वृषभ 'आप' के समीप जाता है (ऋ09-76-5) दस अंगुलिया ग्रावाओं द्वारा वृषभ सोम को जलों में दुहती है

- शेष पृष्ठ 6 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक : 26-27-28 सितम्बर, 2014

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें तथा अपनी सुविधा के लिए रेलवे आरक्षण आदि अभी से करा लेवें। 25 सितम्बर को रात्रि में ही पहुंच जाएं 26 की प्रात: गोष्ठी आरम्भ हो जाएगी। प्रान्तीय सभा के माध्यम से आने वाले नामों को ही भाग लेने की स्वीकृति दी जा सकेगी। कृपया अपने पहुंचने की सूचना सभा को पत्र अथवा ईमेल- *aryasabha@yahoo.com* द्वारा अवश्य दें ताकि तदनुसार उचित व्यवस्था की जा सके।

आचार्य बलदेव (प्रधान, सार्व.सभा) **प्रकाश आर्य** (मन्त्री, सार्व.सभा) **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (कुलपति, गु. कां, विवि.)

जिंदगी संवार देती है देने की भावना

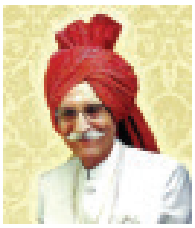

ह में यह जिंदगी सिर्फ इसीलिए नहीं मिली है कि जो भी मिले, उससे कुछ हासिल कर लेने की उम्मीद किए रहें, कुछ पाने के लिए उसके सामने हथेली फैला दें। मगर बड़ा अफसोस होता है आज के जमाने के इस नजरिए को देख कर, जहां हर कोशिश, हर मुलाकात के पीछे सिर्फ अपना स्वार्थ होता है। सच कहूं, तो ऐसा नजरिया, ऐसा ओछा भाव हमें अपनी नजरों में भी गिरा देता है और जो आदमी अपनी नजरों में गिर जाए, उसे भला आनन्द कैसे हासिल हो सकता है-नजरों से जो गिर जाए मुश्किल है उसका सम्भलना। इसलिए यदि जिंदगी का असली आनंद पाना हो, तो हथेली पसारने की आदत छोड़नी होगी, स्वार्थ के संकुचित दायरे से बाहर निकलना होगा और देने की लालसा अपने अंदर लानी होगी, न्यौछावर करने का उतावलापन लाना होगा।

जिस आदमी में यह खासियत आ जाएगी, लुटाकर आनंद पाने की आदत लग जाएगी, वह आनंद से कभी भी दूर नहीं हो सकता। मेरी अब तक की व्यावसायिक तरक्की से आप सभी वाकिफ हैं, मगर मेरे चेहरे की मुस्कराहट के पीछे इस तरक्की से भी बढ़कर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने की भावना है। जो भी मिला, इस संसार से मिला, इसलिए उसे इस संसार के लिए न्यौछावर कर देने में ही कल्याण है। यदि हम संसार से मिली संपत्ति को सिर्फ अपनी तिजोरी में कैद करने का ही भाव बना लेंगे, तो दु:ख, ग्लानि, तनाव के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा, लेकिन यदि इसे दूसरों की खुशहाली के लिए न्यौछावर कर देंगे, तो हमारा आनंद हासिल करने का मकसद बखूबी पूरा हो जाएगा।

मैं परमात्मा का शुक्रगुजार हूं कि कम उम्र में ही मुझे आनंद पाने का यह रहस्य समझ में आ गया और हर दौर में, मुश्किल हालातों में भी मुस्कराहट ने मेरा साथ न छोड़ा। मैंने संघर्ष किया, समृद्धि अर्जित की, मगर मेरा मकसद अपने संघर्ष से, अपनी समृद्धि से सबको सुख पहुंचाना रहा और सुख पहुंचाने से, आनंद से बड़ा गहरा रिश्ता बना रहा।

कुल मिलाकर मैं आप सबको यही बताना चाहूंगा कि जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए अपने अंदर देने की भावना लाएं, अपनी उपलब्धियों को दूसरों की खुशहाली का जरिया बनने दें। यदि आप ऐसा करने में कामयाब हो जाते हैं, तो जिंदगी संवरते देर न लगेगी।

– *महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष, म. चु.ध. ट्रस्ट*

सिंगापुर में राजनैतिक अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य भेंट

सिंगापुर में भारतीय राजदूत श्रीमती विजय ठाकुर सिंह को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए आचार्य आनन्द पुरुषार्थी साथ में हैं सिंगापुर आर्यसमाज के अधिकारी श्री ओ. पी. राय जी एवं पं. नरेन्द्र जी। इससे पूर्व सिंगापुर की लोकसभा के सांसद सरदार श्री इन्द्रजीत सिंह जी को वैदिक साहित्य भेंट किया गया। इन दोनों राजनैतिक अधिकारियों को सिंगापुर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित भी किया गया।

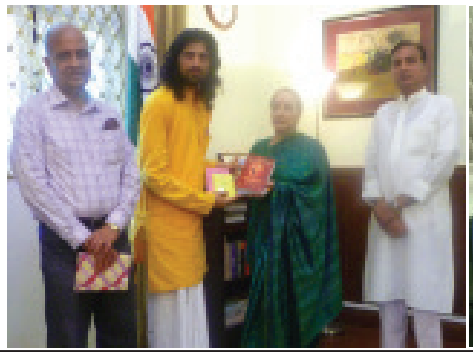

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के सहयोग से

श्रीनगर राष्ट्रीय पुस्तक मेले में पहली बार वैदिक साहित्य प्रचार कार्य सम्पन्न

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सानिध्य में जम्मू कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में कश्मीर हॉट एक्जीविशन ग्राउण्ड में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का प्रचार कार्य किया गया। यह पुस्तक मेला 23 से 31 अगस्त तक आयोजित मेले में हिन्दू ही नहीं बल्कि मुस्लिम समुदाय ने भी उत्साह पूर्वक वैदिक साहित्य का क्रय किया। जो अपने आप में विलक्षण है। ऐसे क्षेत्रों में यह प्रथम प्रयास ही नही मेले की अभूतपूर्व सफलता भी है। दिल्ली सभा का यह एक सराहनीय कदम है जिससे एक नई साहित्यिक क्रान्ति का शुभारम्भ कहा जा सकता है। सभा की ओर से तिरुवनन्तपुरम् (केरल) में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भी स्टाल बुक कराया गया है। वहां भी सभा वैदिक साहित्य के प्रचार को गति प्रदान करेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

तिरुवनन्तपुरम् पुस्तक मेला

स्थान : पुथारीकंडम मैदान, तिरुवनन्तपुरम् (केरल)

4 से 12 अक्तूबर, 2014 : प्रात : 11 बजे

दक्षिण भारत आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

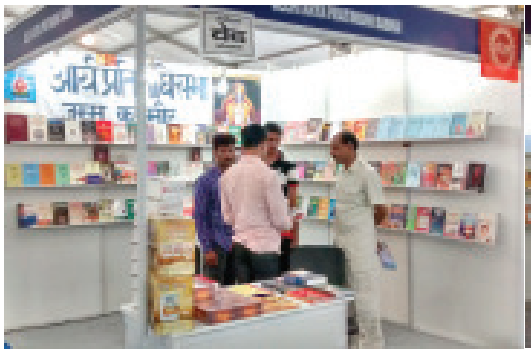

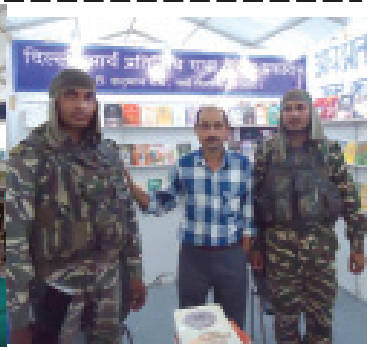

पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल पर आगन्तुक पुस्तक प्रेमियों को एवं सेना पुलिस के जवानों को वैदिक साहित्य के बारे में जानकारी देते श्री रवि प्रकाश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का

प्रथम वार्षिकोत्सव, गुरु विरजानन्द दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

रविवार
21 सितम्बर, 2014

समय
सायं: 3 से 6:30 बजे

स्थान : आर्यसमाज आनन्द विहार
एल ब्लाक, हरि नगर नई दिल्ली

आर्यसमाज को संगठनबद्ध करने तथा वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यों को गति देने हेतु

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियाँ : पूर्वी दिल्ली की गोष्ठी सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 3 अगस्त, 2014 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज के कार्य, गतिविधियों, संगठन सम्बन्धी जानकारी देने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार उत्तरी दिल्ली में एक, उत्तर-पश्चिम में एक, पश्चिम दिल्ली में दो, दक्षिण दिल्ली में दो, पूर्वी दिल्ली में एक तथा मध्य दिल्ली में भी एक बैठक आयोजित की जाएंगी।आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। बैठक का दिन, समय, स्थान एवं संयोजक निम्न प्रकार निश्चित किए गए हैं। समस्त उपस्थित सदस्यों के लिए सायंकालीन भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। - **विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9958174441**

पश्चिमी दिल्ली -1

आर्यसमाज कीर्ति नगर
5 अक्तूबर, 2014 (रवि)
दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य
मो. 9540077858

पश्चिमी दिल्ली -2

आर्यसमाज जनकपुरी सी-3
12 अक्तूबर, 2014 (रवि)
दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान
मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1
26 अक्तूबर, 2014 (रवि)
दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी
मो. 9810014097

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन उपलब्ध

सभा द्वारा संचालित एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं भी इस अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध रहेंगी। वेद प्रचार मंडलों से निवेदन है कि वेद प्रचार वाहन अपने यहां मंगवाकर प्रचार कार्य करें। प्रचार वाहन मंगाने हेतु श्री एस.पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

मध्य दिल्लीक्षेत्र की क्षेत्रीय गोष्ठी स्थगित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इस शृंखला में मध्य दिल्ली की आर्यसमाजों की गोष्ठी 21 सितम्बर की प्रात: आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। सभा के संस्कृत गुरुकुल का वार्षिकोत्सव भी इसी दिन सायंकाल होने के कारण इस बैठक को स्थगित किया जा रहा है। गोष्ठी की नई तिथि शीघ्र घोषित की जाएगी। आपको हुई असुविधा के लिए खेद है। - ***अरुण प्रकाश वर्मा (संयोजक), विनय आर्य, महामन्त्री***

पृष्ठ 4 का शेष

(ऋ09-80-5) यह सोम सहस्र धाराओं से बहने वाला वृषभ है, जो ऋतजात है-

सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने। ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत्।।

(ऋ09-108-8)

सोम उक्षा भी है। ऋग्वेद में 5 वार सोम-सूक्तों में उसके लिए उक्षा शब्द आया है। उक्षा सोम जब निचोड़े जाने पर शब्द करता है, तब धेनुएँ (**प्रीणयित्री स्तुतियाँ या आप:**) उसके समीप जाती है। (ऋ09-69-4) इस पर्वत निवासी (गिरिष्ठा) उक्षा को बुद्धिमान् लोग ऊर्ध्व स्थानों पर दुहते हैं (ऋ09-95-4)। यह सोम सिन्धु की उत्ताल तरंगो में लहराने वाला उक्षा पशु है-

अंजते व्यंजते समंजते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यंजते। सिन्धोरूच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावा: पशुमासु गृभ्णते।। (ऋ09-86-43)'

अपनी पुस्तक 'वेद मंजरी' में ऋग्वेद (ऋ06-47-1) के एक मन्त्र की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं-'प्राचीन काल में एक सोम-लता होती थी, जिसके पत्तों और डंठलों का रस दूध, जौ के पानी या अन्य ओषधियों के रस के साथ मिलाकर पान किया जाता था। इस लता में पन्द्रह पत्ते होते थे, जिनकी ह्रास-वृद्धि चन्द्र कलाओं की ह्रास-वृद्धि के साथ होती थी। पूर्णिमा को लता पूरे पत्तों के साथ लहलहाती थी और अमावस को पत्र-विहीन हो जाती थी। आयुर्वेद के ग्रन्थ सुश्रुत में इस लता का वर्णन मिलता है तथा वहां इसके अंशुमान्, रक्तप्रभ, मुंजवान् आदि चौबीस भेद तथा हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय पर्वत आदि उत्पत्ति-स्थान भी परिगणित हैं। यज्ञों में इसका उपयोग प्रचुर रूप से होता था, किन्तु इसकी कृत्रिम उपज संभव न थी, या उस समय इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। अत: आज कल यह लता खोज का विषय बनी हुई है। मन्त्र में इस सोम के रस का पान करने वाला स्तोता इसके स्वाद, इसकी तीव्रता तथा इसके रसीलेपन का वर्णन कर रहा है, और कह रहा है कि इसके पीने वाले को संग्रामों में कोई पराजित नहीं कर सकता।

यह तो वाह्य सोम की गाथा। किन्तु इससे भिन्न एक अन्य सोम भी है, जिसे हम '**ब्रह्म**' नाम से जानते हैं। उस 'परब्रह्म' रूप सोम से साधक आत्मा में प्रस्तुत होने वाला ब्रह्मानन्द भी सोम-रस है। उस दिव्य रस का वर्णन करता हुआ साधक कह रहा है- अहो, यह कैसा स्वादु है! इसके स्वाद के सम्मुख सब सांसारिक स्वाद फीके हैं। अहो, यह कैसा मधुर है! इसकी मधुरिमा के आगे सब भौतिक माधुर्य नगण्य हैं। अहो, यह कैसा तीव्र है! पान करते ही शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न कर देता है। अहो, यह कैसा रसीला है! इसके रसीलेपन की तुलना में सब भौतिक रस तुच्छ हैं। जो आत्मा इसका पान कर लेता है, उसे अन्त: करण में चल रहे देवासुर-संग्रामों में कोई काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि असुर परास्त नहीं कर सकता। ब्रह्मानन्द-रूप सोम की रसीली धार का पान कर उसके अन्दर ऐसे दिव्य अध्यात्म-बल का उदय हो जाता है कि वह संघर्ष में सब दुर्दान्त मायावी आन्तरिक रिपुओं को पराजित कर विजयी होता है। उसका आन्तरिक राष्ट्र तमोविहीन और निष्कंटक होकर स्वच्छ, समर्थ और ज्योतिष्मान् हो जाता है। आओ, हम भी उस दिव्य सोम-रस का आस्वादन कर स्वयं को आप्लावित, संतृप्त और कृतकृत्य करें। - ***महादेव, सुन्दरनगर-174401***

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रमाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विभिन्न विषयों पर लेख लिखने एवं सम्पादन कार्य में रूचि रखने वाले आर्य युवा लेखकों की आवश्यकता है। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपने बायोडाटा ईमेल/डाक द्वारा भेजें।

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

दिल्ली की आर्यसमाजें बाढ़ राहत कार्य में आहुति दें

जम्मू-कश्मीर में आई बाढ़ विभीषिका के चलते अहमदाबाद एवं आर्यसमाज बक्शी नगर जम्मू में सम्पन्न हुई सार्वदेशिक सभा की बैठक में प्रान्तीय सभाओं को जारी किए गए निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से इस कार्य में अपनी आहुति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से भिजवाने का आह्वान किया।

सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी ने कहा आप अपना सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा भेजें। आप सेवा कार्यों के लिए यदि सामान देना चाहें तो आटा, दाल, चावल, घी, तेल, चीनी, सूखा दूध, बिस्कुट, पानी की बोतलें, नए कपड़े तथा नए बर्तन अदि भी दान स्वरूप प्रदान राहत शिविर में भेज सकते हैं।

- ***विनय आर्य, महामत्री (9958174441)***

पृष्ठ 2 का शेष

हो जाती है, जिसका कोई निश्चित नियम भी नहीं है।

(5.) शब्द भण्डार की पूर्णता - वर्तमान युग विज्ञान का युग है जहां नए-नए आविष्कार होते रहते हैं। जब आविष्कृत किसी वस्तु का नामकरण करना होता है तब उस भाषा में शब्द निर्माण प्रक्रिया की प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जबकि संस्कृत में वह (शब्द-आज) पूर्व विद्यमान होता है। अत: वैज्ञानिकों को भी संस्कृत शब्दकोष का सहारा लेना पड़ता है।

(6.) अभिव्यक्ति - संस्कृत साहित्य में शब्द की विशेष महत्ता होती है जिसमें स्वत: विशाल रहस्य छिपा रहता है अर्थात् कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति होती है जिसे **गागर में सागर** की उपमा दी जाती है।

(7.) अर्थ द्योतन - संस्कृत साहित्य में दो प्रकार से शब्दों का निर्माण होता है एक धातु से दूसरा मूल शब्दों से। प्रत्येक शब्द ऐसी विशेषता रखता है कि अपना अर्थ प्रकट कर देता है। अत: संस्कृत व्याकरण का ज्ञाता शब्द के माध्यम से ही अर्थ का प्रकाश कर देता है। जिन्हें किसी शब्दकोश की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन अन्य भाषा के विद्वानों को किसी विशेष शब्द का ज्ञान करने के लिए शब्दकोश (डिक्शनरी) की आवश्यकता लेनी ही होती है। जिस कारण से अन्य सभी भाषाएँ संस्कृत के सामने बौनी दिखाई देती है।

अत: संस्कृत भाषा विश्व की सर्वोत्तम भाषा है यदि हमें अन्य किसी भी भाषा का अध्ययन करना हो तो भी संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। आओं संस्कृत पढ़े-पढ़ायें और इसकी अमूल्य ज्ञान-निधि का संरक्षण और संवर्द्धन करें।

- **विनय आर्य**

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में

वैदिक विद्वानों के प्रवचन

आचार्य ज्ञानेश्वर जी
22-24 सितम्बर, 2014
प्रात: 7 से 8 बजे (23-24 को)
सायं : 6:30-7:30बजे (22-23 को)

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
2-4 अक्तूबर, 2014
प्रात: 7:30 से 8:30 बजे
सायं : 5:30-6:30बजे

अधिकाधिक आर्यजन पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें। *– अजय तनेजा, मन्त्री*

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् सै.3 का

वेद प्रचार समारोह

25 से 28 सितम्बर, 2014
यज्ञ : प्रातः 8:30 से 10:30 बजे
ब्रह्मा : श्री दिनशे शास्त्री
प्रवचन : डॉ. ब्रह्मदत्त जी (कोलकाता)
भजन : श्रीमती अलका जी
यज्ञ–प्रवचन : सायं 6 से 8:30 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन : 28 सितम्बर,14
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।
– सत्य प्रकाश आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज रोहतास नगर का

श्रावणी पर्व महोत्सव

पूर्णाहुति एवं समापन : 21 सितम्बर,14
यज्ञ भजन प्रवचन : प्रातः 6:45 से 9 बजे
प्रवचन : पं. ध्रुव कुमार शास्त्री
भजन : पं. भानु प्रकाश शास्त्री
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।
– सुखबीर सिंह त्यागी, मन्त्री

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर
17 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
के अवसर पर
अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का वार्षिक सम्मेलन एवं व्योवृद्ध भजनोपदेशक सम्मान समारोह
11-12 अक्टूबर 2014
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।
- अशोक आर्य, का. अध्यक्ष

आर्यसमाज दयानन्द विहार में

11000 गायत्री महायज्ञ

समापन समारोह : 21 सितम्बर
प्रातः 10 से 1:30 बजे
अध्यक्षता : श्री हरीश कथूरिया
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी
आमन्त्रित वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार सुश्री सविता आर्या, आचार्य धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।
– ईश नारंग, मन्त्री

आर्यसमाज राज नगर - पालम कालौनी नई दिल्ली-110077 का

वार्षिकोत्सव

2 से 5 अक्टूबर, 2014
यज्ञ भजन उपदेश : प्रात: 8 से 9 बजे
ब्रह्मा - श्री उमेश कुल श्रेष्ठ (आगरा)
संगीत - पं० नरदेव (कविरत्न)
मुख्य वक्ता - स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी
समापन समारोह रात्रि 8:00 बजे
- धर्मेन्द्रार्य, प्रधान (9868748204)

आशुलिपिक चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के लिए एक हिन्दी आशुलिपिक की आवश्यकता है। आवेदक को डीटीपी कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी टाइपिंग का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। आर्यसमाज/गुरुकुल की पृष्ठभूमि के आवेदकों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। अपने आवेदन निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें-
महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
aryasabha@yahoo.com

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम), कोझीकोड (केरल) सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची

Contd. from last issue

36.	Dr. Brahm Dev, Haridwar	11,000
37.	Sh. Prem Lata Gupta, Faridabad	11,000
38.	Sh. Rineesh Arya	10,000
39.	Dr. Mukesh Arya , Aryasamaj Shahabad	5,100
40.	Aryasamaj Shahabad	5,100
41.	Sardar Bargacha Singh	1,100
42	Smt. Krishna Sethi, G.K-1, Delhi	1,000
43.	Smt. Kamlesh, Rohini, Delhi	5100

Contd...

इस मद में सहयोग करने वाले दानदाताओं के नाम आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी इसी प्रकार प्रकाशित किए जाएंगे। कृपया अपनी सहयोग राशि **"महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउंडेशन"** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। इस हेतु दिया गया **समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** आप अधिकाधिक महानुभावों को दान देने के लिए प्रेरित करें। अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी/सहयोग के लिए सभा की ईमेल आई.डी. : aryasabha@yahoo.com पर मेल भेजें।
– विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जोधपुर आगमन प्रवास स्मृति का

131वां महोत्सव

26 से 30 सितम्बर, 2014
स्थान : महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जनयनाराण व्यास कॉलेज के पास, मोहनपुरा, महर्षि दयानन्द मार्ग, जोधपुर
यज्ञ : प्रातः 8:30 से 11 बजे
ब्रह्मा : डॉ. धर्मवीर जी
वेदप्रवचन : प्रातः 9:30–10:30 बजे
इस अवसर पर विभिन्न सत्रों में अनेक सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाएगा।
समापन समारोह : 30 सितम्बर,14
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।
– विजय सिंह भाटी, प्रधान

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज काकड़वाडी मुम्बई का वेद प्रचार सप्ताह 10 अगस्त से 17 अगस्त 2014 तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, संस्कृत रक्षा सम्मेलन एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम हुए जिसमें अनेक विद्वानों ने वेद के रहस्य पर प्रकाश डाला। *- मन्त्री*

श्रीमद् दयानन्द गुरूकुल संस्कृत विद्यालय गंगीरी अलीगढ़ (उ०प्र०) का

57वाँ वार्षिक महोत्सव

11-12-13 अक्टूबर 2014
यज्ञ एवं वेद कथा : प्रात: 8 से 12 बजे
भजन व प्रवचन : रात्रि 7:30 से 10 बजे
मुख्य अतिथि : आचार्य स्वदेश जी
राजेश दिवाकर (सांसद)
इस अवसर पर अनक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के भजन एवं प्रवचन होंगे।
- आचार्य मित्रसेन आर्य, संयोजक (9557408565)

आर्ष ज्योति गुरूकुल आश्रम कोसरंगी में

वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन

छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के अन्तर्गत ग्राम कोसरंगी में संचालित आर्ष ज्योति गुरूकुल आश्रम के तत्त्वाधान में एक वृहद् 'वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन' का आयोजन 5, 6, 7 दिसम्बर 2014 को गुरूकुल प्रांगण में आयोजित होगा जिसमें भारत वर्ष के उच्चकोटि के विद्वान एवं राजनेताउपस्थित होंगे। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।
- कोमल कुमार, आचार्य

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रीय ध्येय संस्कृत भाषा में

17.	*डाक तार विभाग*	*: अहर्निशं सेवामहे*
18.	*भारतीय जीवन बीमा निगम*	*: योगक्षेमं वहाम्यहम्*
19.	*श्रम मन्त्रालय*	*: श्रम एव जयते*
20.	*गु.गो.सिह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय*	*: ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्*
21.	*आर्यसमाज*	*: कृण्वन्तो विश्वमार्यम्*
22.	*भारतीय तट रक्षक बल*	*: वयं रक्षाम्*
23.	*हिन्दी अकादमी दिल्ली*	*: अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्*
24.	*आर्यवीर दल*	*: अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु*
25.	*पंजाबी यूनिवर्सिटी*	*: तमसो मा ज्योतिर्गमय*

आपसे आग्रह है कि इन्हें नोट करके अपने विद्यालयों तथा आर्यसमाजों में जरूर लगवाएं। *- महामन्त्री*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

10वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन

23 नवम्बर, 2014 : आर्यसमाज आणंद (गुजरात)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०) द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 10वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन **23 नवम्बर, 2014 को आर्यसमाज आणंद, जिला आणंद (गुजरात)** में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें। जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **3 नवम्बर, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट पर 10 दिसम्बर, 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।

विशेष : 9वां परिचय सम्मेलन 28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हार गंज इन्दौर (मध्य प्रदेश) में आयोजित किया जा रहा है। इसके लिए भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध रहेगी। इसमें तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट पर 10 अक्तूबर, 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।- **श्री अर्जुनदेव चड्ढा,** राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 सितम्बर, 2014 से रविवार 21 सितम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18 /19 सितम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 सितम्बर, 2014

प्रथम पृष्ठ का शेष

लिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने सार्वदेशिक सभा की ओर से 50 हजार रुपये की राशि से राहत कोष स्थापित करके सेवा कार्यों को आरम्भ करने के लिए जम्मू-कश्मीर सभा के अधिकारियों को निर्देशित किया और आर्यसमाज बक्शी नगर को राहत संग्रह केन्द्र बनाते हुए श्री योगेश गुप्ता जी को केन्द्र का संयोजक

जम्मू एवं उधमपुर के ...

सभाओं को आह्वान करते हुए कहा कि सभी प्रान्तीय सभाएं अपने यहां राहत सामग्री एकत्र करें और आर्यसमाज बक्शी नगर जम्मू स्थित राहत शिविर में पहुंचाएं।

जम्मू कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भारत भूषण आर्य ने आर्य सज्जनों एवं आर्य संस्थाओं को अधिकाधिक दान देने का आह्वान किया।

उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने जानकारी देते हुए कहा कि आप अपना आर्थिक सहयोग '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 'कैम्प कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001' के पते पर अथवा '**आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.**' के नाम 'आर्य समाज बक्शी नगर, जम्मू' के पते पर भेज सकते हैं। उन्होंने कहा कि आप अपनी दानराशि ऑनलाइन भी सभा के बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

दानी महानुभाव/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 09481000000276 पंजाब एंड सिंध बैंक IFSC - PSIB 0020948

'आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.' खाता सं. 10194249813 भारतीय स्टेट बैंक IFSC - SBIN0001291

विशेष :(1) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के खाते में अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 9540040339 परे सूचित करें तथा aryasabha@yahoo.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

(2) **आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.** के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 0941913884 पर सूचित करें तथा bharatveena@gmail.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें, जिससे उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक

आचार्य बलदेव (प्रधान) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रकाश आर्य (मन्त्री) आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर

भारत भूषण आर्य (प्रधान) रविकान्त आर्य (मन्त्री) योगेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष) संयोजक, राहत शिविर

नियुक्त किया।

बैठक में श्रीनगर के प्रतिनिधि एवं सभा के उपमन्त्री श्री उपेन्द्र कृष्ण भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि श्रीनगर स्थित आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं को भी बाढ़ से काफी हानि पहुंची है। बाढ़ का पानी कम होने पर जम्मू-कश्मीर सभा प्रतिनिधि वहां जाकर उन भवनों मे नुकसान का जायजा लेंगे और उनके लिए क्या किया सकता है इस पर अपनी रिपोर्ट देंगें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा कि आर्य समाज के छठे नियम 'संसार का उपकार करना इस (आर्य) समाज का मुख्य उद्देश्य है' के अनुसार हमें इस दैविक आपदा से त्रस्त प्रत्येक मानव की सेवा करना हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिए। उन्होंने कहा इस त्रासदी से बेसहारा हुए बच्चो को आर्य समाज आश्रय देगा।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम जितना अधिकाधिक सम्भव हो उनका अन्न-जल का प्रबन्ध करें और मानव सेवा कार्यों में सहयोग करें। उन्होंने विश्वभर की समस्त आर्य संस्थानों से अपील करते हुए कहा है कि हमें अधिकाधिक धनराशि जम्मू कश्मीर आर्य समाज के माध्यम से भेजनी चाहिए ताकि वहां राहत एवं सेवा कार्य निरंतर संचालित हो सके। उन्होंने कहा कि आप आटा, दाल, चावल, घी, तेल, चीनी, सूखा दूध, बिस्कुट, पानी की बोतलें आदि भी दान स्वरूप अपनी-अपनी प्रान्तीय सभा के माध्यम से भेज सकते है जो सज्जन सीधे जम्मू कश्मीर में सहयोग देना चाहे वें आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के कार्यालय आर्यसमाज बक्शी नगर जम्मू में सीधे भेज सकते है।

उन्होंने भारत की समस्त प्रान्तीय

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह